आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 4 अंक : 6 फरवरी, 2017 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

परिकल्पना एवं निर्देशन : कुलपति प्रो. (डॉ.) कर्नल ए.के. गहलोत

कुलपति प्रो. (डॉ.) कर्नल ए.के. गहलोत द्वारा 26 जनवरी 2017 को विश्वविद्यालय में ध्वजारोहण के अवसर पर उद्‌बोधन के अंश

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

प्रिय, छात्र–छात्राओं, कर्मचारियों, फैकल्टी सदस्यगण, अधिकारी, उपस्थित भाई–बहनों और बच्चों। 68वें गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। आज ही के दिन देश की संविधान निर्मात्री सभा और बाबा भीमराव अम्बेडकर के अथक प्रयासों से देश में नया संविधान लागू हुआ और हम विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में स्थापित हुए। आजादी के बाद हमारे देश ने चंहुमुखी प्रगति की है। देश में 7.2 की वृद्धि दर कायम की गई है जो कि विश्व के परिपेक्ष्य में बहुत अच्छी है। कृषि प्रधान देश में वैज्ञानिकों और कृषकों के प्रयासों से हरित और श्वेत क्रांति के परिणामस्वरूप कृषि उत्पादन में आत्मनिर्भरता का लक्ष्य प्राप्त किया गया। वेटरनरी विश्वविद्यालय ने भी पशुचिकित्सा शिक्षा, अनुसंधान और प्रसार के कार्यों में तीव्र गति से आगे बढ़कर नए आयाम स्थापित किए हैं जिसकी बदौलत राजुवास देश में एक ''ब्राण्ड विश्वविद्यालय'' बन गया है। विश्वविद्यालय ने अच्छी गुणवत्ता के मानव संसाधन का सृजन कर पशुचिकित्सा और शिक्षा में आधुनिकतम तकनीक और प्रयोगशालाओं में उच्च प्रौद्योगिकी को तेजी से लागू किया है। यहां के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित विभिन्न पशुपालन की तकनीक और नवाचारों का सीधा लाभ राज्य के कृषक और पशुपालक समुदाय को मिल रहा है। राजुवास गांव–ढ़ाणी तक बैठे किसान और पशुपालकों तक अपनी पहुंच बनाने के लिए प्रसार शिक्षा को मॉडल के रूप में विकसित कर लागू कर रहा है। इसके तहत चौबीसों घण्टे टोल–फ्री हैल्प लाइन सेवा की शुरूआत कर वैज्ञानिकों, पशुचिकित्सा विशेषज्ञों और पशुचिकित्सा शिक्षकों की सेवाएं और कॉन्फ्रेंसिंग सुविधा प्रदान की गई है। आकाशवाणी केन्द्रों से राज्य में प्रसारित साप्ताहिक कार्यक्रम ''धीणे री बात्यां'' के लोकप्रिय प्रसारण के चार वर्ष पूरे कर लिए गए हैं। राजुवास के बीकानेर परिसर में 100 फुट ऊंचा राष्ट्रीय तिरंगा लहरा रहा है जो हम सबके लिए प्रेरणादायी है। राजुवास में छात्रों और शिक्षकों के लिए वैज्ञानिक और तकनीक आधारित लघु फिल्मों के निर्माण को प्रोत्साहन के लिए स्मार्ट–क्लब का गठन भी किया गया है। राजुवास द्वारा हाल ही में यूथ फेस्टिवल का सफल आयोजन किया गया। आगामी 22 से 25 फरवरी, 2017 को ''एग्री यूनिफेस्ट–2017'' की मेजबानी का जिम्मा राजुवास को मिला है, जो हमारे लिए गौरव की बात है। आओ! हम सब मिलकर देश की उन्नति और विकास में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें। जय हिन्द!

केन्द्रीय वित्त एवं कॉर्पोरेट मामलात के राज्यमंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल द्वारा 15 जनवरी 2017 को वेटरनरी विश्वविद्यालय परिसर में स्वच्छ भारत मिशन का शुभारम्भ

मुख्य समाचार

केन्द्रीय पशुपालन सचिव ने किया पशुधन अनुसंधान केन्द्र, चांदन का अवलोकन

भारत सरकार के पशुपालन, डेयरी और मत्स्य विभाग के सचिव श्री देवेन्द्र चौधरी ने 17 जनवरी को वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशुधन अनुसंधान केन्द्र, चांदन का दौरा कर अनुसंधान और देशी गौ संवर्द्धन कार्यों का जायजा लिया। उन्होंने पश्चिमी राजस्थान की विख्यात थारपारकर गौ नस्ल के पालन और नस्ल संवर्द्धन कार्यों की जानकारी ली। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक प्रो. राकेश राव ने बताया कि केन्द्र पर थारपारकर नस्ल के वैज्ञानिक लालन–पालन, स्वास्थ्य देखभाल और उन्नत पशु पोषण से ही 25 लीटर प्रति दिन दूध देने वाली थारपारकर गाय मौजूद है। गौ नस्ल का श्रेष्ठ जर्मप्लाज्म क्षेत्र के पशुपालकों और गौशालाओं को सुलभ करवाया जा रहा है जिससे इस नस्ल का प्रसार और संवर्द्धन हो सके। केन्द्रीय सचिव चौधरी ने जैसलमेर जिले में थारपारकर नस्ल के संवर्द्धन कार्यों को पशुपालकों के लिए महत्वपूर्ण बताते हुए अपने सुझाव दिए।

राज्य सरकार द्वारा वी.यू.टी.आर.सी. के लिए रतनगढ़ में भूमि का आंवटन

राज्य सरकार ने चूरू जिले के रतनगढ़ कस्बे में वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र के लिए 2.18 बीघा भूमि का आंवटन किया है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने बताया कि चूरू जिले के पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र के नए भवन का निर्माण रतनगढ़ कस्बे के राजमार्ग चौराहे के समीप स्थित भूखण्ड पर निर्धारित मापदण्डों के अनुरूप शीघ्र ही शुरू किया जाएगा। इस केन्द्र के बन जाने से चूरू जिले के किसान और पशुपालकों को विश्वविद्यालय अनुसंधान का लाभ और उन्नत पशुपालन के लिए प्रशिक्षण, पशु रोग निदान सेवाएं उपलब्ध करवाई जाएगी। केन्द्र पर पशुपालक प्रशिक्षण हॉल, पशु रोग निदान प्रयोगशालाएं और पशुचिकित्सा विशेषज्ञों के कक्षों का निर्माण किया जाएगा।

राष्ट्रीय भेड़ और ऊन मेले में राजुवास प्रदर्शनी को मिला द्वितीय पुरस्कार

केन्द्रीय ऊन विकास बोर्ड, जोधपुर द्वारा आयोजित "राष्ट्रीय भेड़ व ऊन मेला" में वेटरनरी विश्वविद्यालय की टेक्नोलॉजी प्रदर्शनी को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया है। केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर (टौंक) में आयोजित एक दिवसीय मेले में आयोजित प्रदर्शनी को सैकड़ों कृषकों और पशुपालकों ने देखा। मेले के मुख्य अतिथि कृषि वैज्ञानिक भर्ती मंडल, नई दिल्ली के चेयरमैन डॉ. गुरूबचन सिंह ने राजुवास के डॉ. अतुल शंकर अरोड़ा को यह पुरस्कार प्रदान किया। इस अवसर पर केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, के निदेशक डॉ. एस. एम.के. नकवी भी मौजूद थे।

राजुवास द्वारा प्रति वर्ष 25 हजार पशुपालकों को वैज्ञानिक प्रशिक्षण देने का लक्ष्य

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशुधन चारा संसाधन प्रबंधन एवं तकनीक केन्द्र में हनुमानगढ़ जिले के 35 पशुपालक–कृषकों का पांच दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 16–20 जनवरी तक आयोजित किया गया। पशुपालन एवं डेयरी तकनीक विषय पर उपनिदेशक कृषि एवं परियोजना निदेशक आत्मा हनुमानगढ़ के सौजन्य से प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। समापन अवसर पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने कहा कि पशुधन उत्पादन बढ़ाने और पशुपालकों को समृद्ध बनाने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा बड़े पैमाने पर पूरे राज्य में वैज्ञानिक पशुपालन और उन्नत पोषण तकनीकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इस वित्तीय वर्ष में 25 हजार पशुपालकों को प्रशिक्षण देने का कार्य पूरा कर लिया जाएगा। राज्य में 90 प्रतिशत किसान पशुपालन से जुड़े हैं। वेटरनरी विश्वविद्यालय ने राज्य में उन्नत पशु पोषण और पशुओं की स्वास्थ्य देखभाल से ही दुग्ध उत्पादन बढ़ाने में सफलता अर्जित की है। इस अवसर पर कुलपति द्वारा प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र भी प्रदान किये गये।

मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ़ के पशुपालकों ने जाना कुक्कुट पालन प्रबंधन

वेटरनरी विश्वविद्यालय की कुक्कुट शाला में 'कुक्कुट प्रबंधन के विभिन्न आयाम' विषय पर पशु विविधिकरण सजीव मॉडल के तहत 23–25 जनवरी तक तीन दिवसीय पशुपालन प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. आर.के. धूड़िया ने सभी 21 संभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए। इस अवसर पर निदेशक प्रो. धूड़िया ने कुक्कुट प्रबंधन के विभिन्न आयामों की एक पुस्तिका का विमोचन भी किया। प्रशिक्षण समन्वयक प्रो. बसन्त बैस ने बताया कि इस प्रशिक्षण शिविर में गैर सरकारी संगठन "व्रुति" के तहत मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ से आये हुए पशुपालकों को मुर्गीपालन के विभिन्न तरीके बताए गए।

"पशुपालक कैलेण्डर–2017" का हुआ लोकार्पण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने 7 जनवरी को "राजुवास पशुपालक कैलेण्डर–2017" का लोकार्पण किया। विश्वविद्यालय के जनसम्पर्क प्रकोष्ठ द्वारा तैयार पशुपालन उपयोगी व तकनीकी जानकारी का रंगीन कैलेण्डर प्रतिवर्ष जारी किया जाता है। कुलपति प्रो. ए. के. गहलोत ने बताया कि प्रत्येक माह में पशुपालन के उपयोगी आवश्यक हिदायतें, रोगोपचार और उन्नत पशुपोषण के बारे में जानकारी का इसमें समावेश किया गया है जो पशुपालकों के लिए अत्यंत लाभकारी है।

रिलायन्स इन्डस्ट्रीज के साथ अनुसंधान एवं प्रसार का एम.ओ.यू. तीन साल बढ़ाया

वेटरनरी विश्वविद्यालय और रिलायन्स इन्डस्ट्रीज लिमिटेड के बीच पशुचिकित्सा एवं पशुपालन अनुसंधान और प्रसार कार्यों के लिए अगले तीन वर्षों के लिए बढ़ाने के करार (एम.ओ.यू.) पर 20 जनवरी को दस्तखत किए गए। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत और रिलायन्स के क्षेत्रीय निदेशक सुदीप गुप्ता ने करार के दस्तावेज एक दूसरे को सुपुर्द किए। इस अवसर पर कुलपति प्रो. गहलोत ने कहा कि राजुवास वैज्ञानिकों ने रिलायन्स इंडस्ट्रीज के साथ मिलकर पशुपालकों के हित में पशुधन उत्पादन बढ़ाने के लिए नवीन तकनीक और नवाचारों में उल्लेखनीय कार्य किया है जिसका फायदा राज्य में दुग्ध उत्पादन बढाने में मिल रहा है। अतः आपसी सहयोग को अगले तीन वर्षों के लिए आगे बढाया गया है। रिलायन्स के क्षेत्रीय प्रबंधक गुप्ता ने कहा कि राजुवास टीम और रिलायन्स के साझा प्रयासों से राज्य में उन्नत पशुपालन तकनीकी के विकास और श्वेत क्रांति के प्रयासों को आगे बढ़ाया जा रहा है।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

वीयूटीआरसी चूरू द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 10, 11, 17, 18, 27 एवं 31 जनवरी को गांव सिद्धमुख, चूरू, धांधु, थेलासर, जासासर एवं बीनादेसर गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 172 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) में प्रशिक्षण से 252 लाभान्वित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 7, 11, 12, 16, 19, 24 एवं 28 जनवरी को गांव रोजड़ी, नरसिंगपुरा, पालीवाला, 2केएसआर, पुरानीबरखा, 2 डीओ एवं गोपालसर गांवों में पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 252 पशुपालकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 9, 12, 20, 24 एवं 28 जनवरी को गांव गिरवर, जामोतरा, डेरना, अजारी एवं भारजा गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 156 पशुपालकों ने भाग लिया।

बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 6, 7, 12, 13, 16, 17 एवं 20 जनवरी को गांव चांदबासनी, लुणोदा, लक्ष्श्री, फिरवासी, हुसैनपुरा, देवरा एवं दुजार गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 163 पशुपालकों ने भाग लिया।

अजमेर केन्द्र द्वारा 303 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 4, 10, 13, 16, 17, 18, 19 एवं 20 जनवरी को गांव मोतीपुरा, भराई, आमली, जसंवन्तपुरा, नाथकी, रामपाली, फतेहगढ़ एवं सरसड़ी गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 303 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 10, 12, 17, 20, 23 एवं 25 जनवरी को गांव पगारा, डेडा, टोरनिया, मिथला, गडाहटकिया एवं बिलुडा गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 131 पशुपालकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा 355 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 4, 6, 7, 9, 11, 13, 17, 19, 21, 24 एवं 25 जनवरी को गांव नगला मैथंना, ऊदपुरी, सादपुरी, दांदैरा, पाई, भटपुरा, जघीना, जटमासी, पहाडपुर, रनधीरगढ़ एवं गढीसाद गांवो में तथा 23 एवं 27 जनवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 355 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, कोटा द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 7, 9, 10, 12, 13, 16, 20, 21 एवं 24 जनवरी को गांव खेरूला, लाड़पुरा, दाता,

राजोपा, श्रीपुरा, भटीपुरा, ढोटी, चन्द्रेसल एवं बृजनगर गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 291 पशुपालकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 10, 12, 14, 16, 18, 19 एवं 21 जनवरी को गांव रूद, जदाना, लसाड़िया कला, भीमगढ़, चटावती, पावली एवं बारू गांवों में तथा 23 जनवरी को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों 314 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, धौलपुर द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 6, 7, 9, 11, 17, 19, 21 एवं 24 जनवरी को गांव पुष्पपुरा, खेड़ली, बचौलीलुधा, जागीरपुरा, कोलारी, आदमपुर, नरपुरा एवं सतारपुरा गांवों में तथा दिनांक 12 जनवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 237 महिला पशुपालकों सहित कुल 385 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, लूनकरणसर द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा 9, 10, 20 एवं 21 जनवरी को गांव सरनाणा, नाथवाना, किसनासर एवं राजपुरिया गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 134 पशुपालकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा गोष्ठी एवं प्रशिक्षण शिविर

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़) द्वारा 7, 16, 18, 21, 24, 28 एवं 31 को गांव सोटी, धानसिया, भगवानसर, गोरखाना, दीपलाना, बाछुसर एवं लेलाना गांवों तथा 10–13 कृषि विज्ञान केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 207 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

एवियन इन्फ्लूएंजा से अपने पक्षियों को सुरक्षित रखें

एवियन इन्फ्लूएंजा या "बर्ड फ्लू" वायरस जनित एक बीमारी है जो साधारणतय जंगली पक्षियों (जलपक्षी जैसे कि हंस बत्तख), मुर्गी, टर्की, बटेर को प्रभावित करती है और अब इसने मनुष्यों व अन्य स्तनधारियों को सवंमित करना शुरू कर दिया है। एवियन इन्फ्लूएंजा (ए.आई.) पक्षियों का एक जटिल संक्रमण है जिसकी पारिस्थितिकी और महामारी विज्ञान में पिछले दशक में काफी बदलाव आया है। किसानों में बड़े पैमाने पर इस जानकारी की कमी है कि एवियन इन्फ्लूएंजा वायरस अपने प्राकृतिक होस्ट/मेजबान में अनुकूलित होने के कारण एक लंबे समय से हमारे पारिस्थितिकी तंत्र का हिस्सा रहा है। इस वायरस ने पारिस्थितिकी तंत्र में अपने उत्तरजीविता के लिये प्राकृतिक मेजबान (मुख्य रूप से जंगली जलपक्षी) व कृत्रिम (उदाहरण के लिए मुर्गीपालन, मुक्त चराई, बत्तख, और जीवित पक्षी बाजार) आबादी में संतुलन स्थापित किया हुआ है। पशुचिकित्सा क्षेत्र में हमारे लिए एवियन इन्फ्लूएंजा कोई नई बात नहीं है। भारत अंडे उत्पादन में पांचवा और कुक्कुट मांस में नौवां दुनिया का सबसे बड़ा उत्पादक देश है। वित्तीय वर्ष 2014–15 के दौरान लगभग 5 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर के साथ अंडा उत्पादन 78 अरब और कुक्कुट मांस उत्पादन 3 लाख मीट्रिक टन पहुँच गया एवं मुर्गीपालन 10 प्रतिशत की दर से प्रतिवर्ष बढ़ रहा है। पिछले कुछ वर्षो में भारत के मुर्गीपालन उद्योग ने राष्ट्रीय सकल उत्पाद (जीडीपी) में लगभग 229 मिलियन यूएस डॉलर का योगदान दिया। भारत में 2005 में पहले एवियन इन्फ्लूएंजा वायरस (एचपीएआई) का प्रकोप हुआ और अभी तक 1 केन्द्र शासित प्रदेश व 15 राज्यों में 25 प्रकोप का सामना करना पड़ा है। इस वजह से बीमार मुर्गियों (74.46 लाख) को मारना पड़ा और मुआवजा, निर्यात आदि पर प्रतिबंध से देश की अर्थव्यवस्था को भारी नुकसान उठाना पड़ा। एवियन इन्फ्लूएंजा वायरस का अभूतपूर्व रूप से भौगोलिक प्रसार और मनुष्य में गंभीर बीमारी पैदा करने की क्षमता, एक नया तथ्य है, इसलिये एवियन इन्फ्लूएंजा वायरस एक वैश्विक स्तर पर न केवल मुर्गीपालकों की जीविका व खाद्य आपूर्ति सुरक्षा के लिये अपितु यह मानव स्वास्थ्य के लिए भी एक गंभीर खतरे के रूप में उभरा है।

वायरस/विषाणु

ऑर्थोमाइक्सोविरिडी परिवार में इस वायरस की ए.बी और सी जातियां हैं। केवल जीनस ए वायरस पक्षियों में पाये जाते हैं और इसीलिए जीनस ए को एवियन इन्फ्लूएंजा या बर्ड फ्लू वायरस करार दिया गया है। एवियन इन्फ्लूएंजा को उनकी सतह पर पाये जाने वाले प्रोटीन के दो समूहों के संयोजन– हेमाग्लूटिनिन या एच प्रोटीन की (संख्या में 18) और नेगिरेमिनिडेज या एन/एच प्रोटीन की (संख्या में 11) के द्वारा वर्गीकृत किया गया है। संक्षिप्त रूप जैसे की एच5एन1, एच7एन7, एच5एन2, एच1एन1 आदि ने एक फ्लू महामारी और इसके साथ जुड़े भयावह परिणामों की सम्भावना की आशंका के कारण कुख्याति अर्जित की है।

बर्ड फ्लू महामारी के लक्षण

एचपीएआई शीघ्र ही बिना किसी चेतावनी के तेजी से फैल सकता है तथा सवंमित पक्षियों में निम्न लक्षण दिखाई देते हैं :

- ऊर्जा और भूख की कमी
- अंडा उत्पादन में कमी/या नरम खोलीदार या कुरूप अंडे
- पक्षी की नाक से पीप का बहाव
- सर, पलके, कंधी, बाली और हॉक्स पर सूजन आना
- कंधी, बाली, कंधी और पैर में बैंगनी रंग
- नाक बहना, खाँसी व छींकना
- ठोकरें खाते हुए चलना या नीचे गिरना
- दस्त होना
- किसी भी नैदानिक लक्षण के बिना अचानक मृत्यु

- ❖ त्वचा और पैर से खून का बहाव
- ❖ कंजक्टिवाइटिस होना

बर्ड फ्लू कैसे प्रसार करता है

एवियन इन्फ्लूएंजा प्रत्यक्ष रूप से, पक्षी –से–पक्षी के संपर्क में आने से तेजी से फैलता है। परोक्ष रूप से यह रोग मेजबान पक्षियों या बीमार पक्षियों से दूषित सतहों या सामग्री के साथ संपर्क में आने से फैलता है। उदाहरण के लिए, प्रवासी जलपक्षी (अर्थात, जंगली बतख और कुछ कलहंस) और पोल्ट्री और पोल्ट्री उत्पादों की तस्करी एवंम मुर्गी पालन उपकरण, लोगों और घरेलू पक्षियों में बीमारी को शुरू करने के लिए संभावित स्त्रोत है। बर्ड फ्लू वायरस खाद, अंडा फ्लैट्स, बक्से, अन्य कृषि सामग्री/उपकरणों के द्वारा संचारित हो सकते हैं।

बर्ड फ्लू से बचाव के तरीके

किसानों व पशुपालकों को अपने पक्षियों और स्वंय को रोग से मुक्त रखने में ये तथ्य मदद कर सकते हैं:–

- ❖ अपने पक्षियों जंगली पक्षियों और प्रवासी जलपक्षी के साथ संपर्क में न आने दें। अपने पक्षियों और उनके उपयोग में आने वाले वस्तुओं को केवल उन्हीं तक सीमित रखें। यह कदम कीटाणुओं और बीमारियों को संचारित होने से रोकता है।
- ❖ साफ–सफाई का ध्यान रखें। अपने पक्षियों के साथ काम करने से पहले और बाद में अपने हाथों को अच्छी तरह से धोयें। साफ कपड़े पहनें और अपने जूते कीटाणुनाशक से साफ करें। पक्षियों या उनके मल के साथ संपर्क में आने वाले पिंजरों और उपकरण आदि को पहले स्वच्छ और बाद में कीटाणु रहित करके उपयोग में लायें। मृत पक्षियों का निपटान सामान्य तरीकों से, जैसे कि गहराई में दफन, खाद बनाना या प्रतिपादन द्वारा ठीक से करें।
- ❖ प्रतिष्ठित स्त्रोतों से पक्षियों की खरीद करें, ताकि स्वस्थ पक्षियों की ही बिक्री हो। नए पक्षियों को कम से कम 30 दिनों के लिए अपने मौजूदा झुंड से अलग रखें। आपके पोल्ट्री फार्म पर अगर एक पक्षी या पक्षियों के झुंड में बर्ड फ्लू के लक्षण दिखाई दे तो, उन्हें घटना के बाद 2 सप्ताह के लिए अपने झुंड से अलग रखें।
- ❖ पोल्ट्री फार्म के उपकरण या मुर्गी पालन की आपूर्ति को अपने पड़ौसियों या अन्य पक्षी मालिकों के साथ न बांटे। अगर इनका उपयोग दूसरे फार्म पर हुआ है या उपकरणों को उनसे ले रहे हैं तो इन वस्तुओं को स्वच्छ और कीटाणुरहित करके ही उपयोग मे लायें।
- ❖ चेतावनी के संकेतों का ध्यान रखें। रोकथाम ही बचाव का अच्छा उपाय है। जल्दी पता लगने से रोग के नियंत्रण में मदद मिलती है। अपने पक्षियों के नियमित निरीक्षण करने की आदत डालें। इससे भले ही आप बर्ड फ्लू न पहचान पायें, परन्तु कोई रोग है इसे समझ सकते हैं।
- ❖ रोग को तुरन्त रिपोर्ट करें, इंतजार मत करें। अगर आप के पक्षी बीमार या मर रहे हैं, तो अपने स्थानीय पशु चिकित्सक, राज्य पशुचिकित्सा या राज्य पशु/पोल्ट्री नैदानिक प्रयोगशाला से संपर्क करें।

डॉ. अलका गालव, डॉ. विकास गालव
प्रो. एस. मेहरचंदानी एवं प्रो. एस. के. कश्यम
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

खुरपका–मुंहपका रोग का टीकाकरण

खुरपका–मुंहपका एक विषाणु जनित रोग है जो इस मौसम में मुख्य रूप से खुर वाले पशुओं जैसे गाय, भैंस, ऊंट, भेड़, बकरी आदि में प्रायः देखने को मिलता है। इस रोग की पहचान पशुपालक रोग के लक्षणों के आधार पर आसानी से कर सकते हैं। पशुपालक को इस बीमारी के कारण अप्रत्यक्ष रूप से अत्याधिक आर्थिक हानि उठानी पड़ती है और कभी–कभी जागरूकता के अभाव में यह बीमारी महामारी का रूप भी ले लेती है। अतः पशुपालक समय रहते बीमारी को यदि गंभीरता से लें तो अपने पशुओं को इस बीमारी से बचा सकते हैं। पशुओं का टीकाकरण ही रोग से बचाव का एकमात्र उपाय है। राज्य भर में खुरपका–मुंहपका रोग के नियंत्रण के लिए पशुपालन विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा पूरे राज्य में गाय व भैंसों में फरवरी के दूसरे सप्ताह से टीकाकरण किया जाना प्रस्तावित है। अतः पशुपालक अपने पशुओं का टीकाकरण करवा कर भारत सरकार के खुरपका–मुंहपका रोग के नियंत्रण की योजना का लाभ उठायें एवं इस योजना को सफल बनावें। इसके लिए पशुपालक इन बातों पर जरूर ध्यान दें–

- पशुपालक अपने पशुओं को स्वच्छ वातावरण में रखें, व उचित पोषण दें एवं समुचित देखभाल करें।
- चूंकि यह एक संक्रामक रोग है अतः पशुपालक रोगग्रस्त पशु को अन्य पशुओं से शीघ्र ही पृथक करें।
- पशुओं का टीकाकरण बीमारी आने से पूर्व आवश्यक रूप से करवायें।
- टीकाकरण से पूर्व पशु को कृमिनाशक दवा देने से टीका बेहतर काम करता है।
- किसी भी बीमार पशु अथवा उपचार के दौरान टीकाकरण न करवाएं।
- टीकाकरण किये पशु का दूध काम में लिया जा सकता है।
- पशुचिकित्सक की सलाह से छोटे बच्चों में प्रथम टीकाकरण के बाद पुनः टीकाकरण (बूस्टर) अवश्य करायें। इसके पश्चात टीकाकरण हर 6 महीने बाद कराएं।
- रोग फैलने की दशा में अपने निकटतम पशु–चिकित्सक से शीघ्र संपर्क करें।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

अपने विश्वविद्यालय को जानें

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर

बीकानेर जिले में पहला और राज्य का 12वां पशुचिकित्सा प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर मुख्यालय पर 11 दिसम्बर, 2016 को लूनकरणसर के विधायक श्री मानिक चंद सुराणा ने विधिवत लोकार्पण किया। समारोह की अध्यक्षता वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने की। इस अवसर पर लोकार्पण समारोह और पशुपालक गोष्ठी के मुख्य अतिथि क्षेत्र के विधायक श्री सुराणा ने संबोधित करते हुए कहा कि वेटरनरी विश्वविद्यालय ने जमीनी हकीकत से कार्य करते हुए प्रशिक्षण केन्द्र खोलकर गांव–ढ़ाणी तक अपनी पहुंच बनाने का महत्ती कार्य किया है। लूनकरणसर क्षेत्र इन्दिरा गांधी नहर की कंवरसैन लिफ्ट परियोजना में सिंचित और कुछ क्षेत्र बारानी है। यहां के पशुपालकों का मुख्य व्यवसाय पशुपालन रहा है। इस क्षेत्र के गांवों में राज्य की प्रख्यात देशी गौवंश ''राठी'' बहुतायत में पाली जाती है। यह केन्द्र प्रारम्भ हो जाने से क्षेत्र के कृषकों और पशुपालकों को उन्नत पशुपालन तकनीकी और वैज्ञानिक रीति–नीति से पशु उत्पादन को बढ़ाने के लिए समुचित प्रशिक्षण की सुविधा शुरू हो गई। राज्य सरकार द्वारा लूनकरणसर कस्बे में एक जीर्ण–शीर्ष भवन की 76X76 मीटर क्षेत्रफल को केन्द्र खोलने के लिए वेटरनरी विश्वविद्यालय को हस्तातंरित किया गया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के निर्माण अभियन्ताओं द्वारा 80 लाख रू. राशि व्यय करके केन्द्र का नव निर्माण कर भव्य स्वरूप प्रदान किया गया। केन्द्र में कृषक पशुपालकों के लिए एक प्रशिक्षण हॉल, एक आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित प्रयोगशाला, पशुपालकों एवं कृषकों के लिए आवास कक्षों के साथ ही एक व्याख्यान कक्ष सहित कार्यालय स्टॉफ और अधिकारियों के कक्षों का निर्माण करवाया गया है। केन्द्र की प्रमुख गतिविधियों में वैज्ञानिक–पशुपालक वार्ता, विचार गोष्ठी का आयोजन करके पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान में नवाचारों के बारे में प्रशिक्षण देना है।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–फरवरी, 2017

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
पी.पी.आर.	भेड़, बकरी	नागौर, जोधपुर, बीकानेर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, चूरू, सीकर, उदयपुर, पाली, सिरोही, जैसलमेर
चेचक/माता रोग	भेड़, ऊँट, बकरी	बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सिरोही, जैसलमेर, कोटा, बूंदी
मुँहपका–खुरपका रोग	गाय, भैंस, बकरी, भेड़	दौसा, जयपुर, धौलपुर, बीकानेर, सवाईमाधोपुर, अजमेर, अलवर, बारां, भरतपुर, श्रीगंगानगर, नागौर, सीकर
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	जयपुर, धौलपुर, बीकानेर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, टोंक, जोधपुर, जैसलमेर, पाली, कोटा
लंगड़ा बुखार/ठप्पा रोग	गाय	चित्तौड़गढ़, हनुमानगढ़, जयपुर, जैसलमेर, सीकर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, नागौर
गलघोंटू	गाय, भैंस	जयपुर, चित्तौडगढ, पाली, टौंक, भरतपुर, उदयपुर, अलवर, भीलवाड़ा, दौसा, टोंक, सीकर, जैसलमेर
प्लूरोन्यूमोनिया	बकरी	सीकर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, जोधपुर, जयपुर
अन्तः परजीवी (एम्फीस्टोमीयेसिस, फेसियोलियेसिस)	भैंस, गाय, बकरी, भेड़	भरतपुर, उदयपुर, कोटा, धौलपुर, डूंगरपुर, हनुमानगढ़, सवाईमाधोपुर, सीकर, बूंदी
रानीखेत रोग	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा
इन्फेक्सीयस ब्रोंकाइटिस	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. जी.एस. मनोहर, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान, एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर।
फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

अपने स्वदेशी भेड़ वंश को पहचानें

नाली भेड़ : गौरव प्रदेश का

भेड़ की नाली नस्ल राजस्थान के गंगानगर, हनुमानगढ़, झुन्झुनूं तथा चूरू जिलों में मुख्यतया पाई जाती है। इसके अलावा यह हरियाणा के हिसार एवं रोहतक जिलों में भी पाई जाती है। यह राजस्थान, हरियाणा जैसे शुष्क–अर्द्धशुष्क वातावरणीय क्षेत्रों के अनुकूल नस्ल है। यह नस्ल मुख्यतया चराई के लिए खेजड़ी एवं बबूल के चारे पर पोषित रहती है। यह मध्यम आकार का पशु है जिसके मुंह का रंग हल्का भूरा तथा चमड़ी गुलाबी होती है। नर व मादा दोनों में ही सींग नहीं पाए जाते हैं। कान मध्यम आकार के नलीदार होते हैं। पूंछ छोटी व पतली होती है। इसकी ऊन सफेद, मोटी घनी एवं लम्बे रेशे वाली होती है। इसका सिर, पेट व टांगें भी ऊन से ढकी होती हैं। यह 12–18 माह में वयस्क हो जाती है। एक बार में एक बच्चे को प्रायः जन्म देती है तथा जन्म देने की दर लगभग 67 प्रतिशत है। नर मेमनों को 6–9 माह की आयु में मांस उत्पादन के लिए बेच दिया जाता है। एक वर्ष में 1.5–3 किलो तक ऊन प्राप्त हो जाती है जिसके रेशे की मोटाई 35 माइक्रॉन तथा मोड्यूलेशन 31 प्रतिशत होता है। वयस्क भेड़ का शारीरिक भार 35–40 किलो तक होता है तथा ऊंचाई 65–70 सेमी होती है। राजस्थान की भेड़ नस्लों में नाली भेड़ की ऊन सबसे घनी तथा भारी होती है तथा गलीचा उत्पादन के लिए उत्तम है। नस्ल के संरक्षण पर उचित ध्यान देने की आवश्यकता है। साथ ही ऊन की गुणवत्ता में सुधार हेतु संकर प्रजनन की भी आवश्यकता है। भेड़ पालन उष्ण प्रदेश में किसान भाईयों की अतिरिक्त आय का अच्छा स्त्रोत है।

सफलता की कहानी

डेयरी से प्रतिष्ठा अर्जित कर दूसरों को रोजगार भी दिया

कोटा जिले के गांव जगन्नाथपुरा के प्रगतिशील एवं जागरुक पशुपालक महेन्द्र कुमार मालव पशुपालन को एक व्यवसाय के रुप में अपनाकर अपने सामाजिक व आर्थिक स्थिति को काफी सुदृढ बना चुके हैं। मालव एक सामान्य कृषक परिवार से सम्बन्धित हैं। 5 वर्ष पूर्व इन्होंने कृषि के साथ साथ पशुपालन को अपनाने की सोची और इसके लिये वे 6 दुधारू गाय खरीद कर लाये। दृढ़निश्चयी और पशुपालन को व्यवसाय की तरह अपनाने की धुन में इन्होंने पशुपालन से सम्बधित विभिन्न जानकारियां प्राप्त कर आगे बढ़े। पशु संख्या के साथ साथ दुग्ध उत्पादन भी बढने पर आर्थिक रुप से सुदृढ़ता आने पर पशुपालन को ही मुख्य व्यवसाय के रुप में अपनाने का दृढ़ निश्चय कर लिया। वे विभिन्न उन्नत तकनीकों को अपना रहे हैं। पशुओं के लिए पक्का आवास बना रखा है तथा उम्र व अवस्था अनुसार पशुओं के अलग–अलग शेड बना रखे हैं। समय समय पर पशुपालन की उन्नत तकनीकों की जानकारी लेने के लिए पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र–कोटा द्वारा आयोजित प्रशिक्षणों में भी भाग लेते हैं तथा व्यक्तिगत व दूरभाष पर जानकारी व समस्याओं के निवारण हेतु सम्पर्क में रहते हैं। प्रशिक्षण से महेन्द्र कुमार को काफी फायदा हुआ है। प्रशिक्षण के दौरान कृमिनाशक दवा का उपयोग, खनिज लवण मिश्रण की उपयोगिता, टीकाकरण, ग्याभिन पशुओं की देखभाल, पशुओं में नस्ल सुधार द्वारा दुग्ध उत्पादन में वृद्धि, भूसे को यूरिया उपचारित करने का ज्ञान, सन्तुलित पशु आहार आदि की जानकारी प्राप्त की है। वे पशुपालन की नवीनतम व उन्नत तकनीकों की जानकारी गांव के अन्य पशुपालकों को भी बताते हैं। वर्तमान में 5 बीघा खेती की जमीन के साथ इनके पास 13 गायें, 10 वयस्क पशु व 8 बछडे–बछड़ियां हैं जिनसे दुग्ध उत्पादन 150 लीटर है जिसकी वे शहर में बिक्री करते हैं। वर्तमान मे इन्होंने कोटा शहर के बोरखेडा क्षेत्र मे दुग्ध डेयरी भी खोल रखी है। पशुपालन व्यवसाय से इनकी आर्थिक स्थिति मजबूत हो रही है तथा वर्तमान में पशुओं व पशुशाला की देख रेख के लिए 5 लोगों को रोजगार भी उपलब्ध करवाया है। वे अपनी सफलता का पूरा श्रेय अपने परिवारजनों को देते हैं जिन्होंने पशुपालन के हर कार्य में कंधे से कंधा मिलाकर साथ दिया तथा पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र–कोटा का भी आभार मानते हैं।

(सम्पर्क– श्री महेन्द्र कुमार मालव, मो. 9602267849)

निदेशक की कलम से...

यूरिया मोलासिस मिनरल ब्लॉक पशुओं को बचाता है कुपोषण से

प्रिय भाईयों और बहनों! किसान और पशुपालक अपने पशुओं को सूखे आहार के रूप में तूड़ी, पराली तथा ज्वार की कुट्टी ज्यादा खिलाते हैं क्योंकि हरे चारे की पर्याप्त उपलब्धता का अभाव रहता है। इस प्रकार का आहार देने से पशु को पर्याप्त ऊर्जा, प्रोटीन व खनिज तत्वों की आवश्यक पूर्ति नहीं हो पाती । इससे पशु दुर्बल और रोग ग्रस्त हो जाता है। इन परिस्थितियों में उसकी उत्पादक क्षमता भी कम हो जाती है, जिससे पशुपालकों की आय में भी कमी आती है और पशुपालन महंगा साबित होता है। इससे बचने के लिए आप एक सीधा और सरल उपाय करके आसानी से बच सकते हैं। पशुपोषण वैज्ञानिकों ने यूरिया मोलासिस मिनरल ब्लॉक बनाने की विधि बनाई है जिसका उपयोग करके संतुलित और पौष्टिक आहार की पूर्ति कर सकते हैं। यूरिया मोलासिस मिनरल ब्लॉक को पशु को चाटने के लिए दिया जाता है जिसे आप अपने घर पर ही आसानी से तैयार कर सकते हैं। यह एक उच्च प्रोटीनयुक्त सान्द्र पशु आहार है जिसमें आवश्यक मात्रा में कार्बोहाइड्रेड, पोषक तत्व, खनित लवण तथा विटामिन पाये जाते हैं। यह जुगाली करने वाले पशुओं और उसके रूमन में मौजूद सूक्ष्म जीवों को पोषण प्रदान करने में इन ब्लॉकों की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। इस ब्लॉक में मौजूद मोलासिस ऊर्जा का प्रमुख स्त्रोत होता है। इसको बनाने के लिए गर्म तथा ठंडी विधियां प्रचलित हैं। ठंडी विधि अधिक फायदेमंद है। घुले हुए शीरे में नमक, खनिज मिश्रण व यूरिया अच्छी तरह से मिलाकर गेहूं की चापड़ और सीमेंट पाउडर को अच्छी तरह से मिला लें। बाजार में संचालित व हाथ से ब्लॉक बनाने की लघु मशीनें उपलब्ध हैं। इसे मशीन के सांचों या लकड़ी के बने सांचों में डालकर दबाने से ब्लॉक प्राप्त किये जा सकते हैं। हरे चारे की उपलब्धता में कमी होने पर इसे खिलाना अधिक लाभदायक होता है। एक वयस्क पशु को 500 से 700 ग्राम मात्रा प्रतिदिन दिया जाना उपयुक्त रहता है। इससे न केवल पशु को कुपोषण से बचाया जा सकता है वरन् अधिक उत्पादन लेकर पशुपालन को लाभकारी भी बनाया जा सकता है। **-प्रो. आर.के.धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर**

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **फरवरी, 2017** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर सायं 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठाएं।

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	**प्रो. कर्नल (डॉ.) ए. के. गहलोत,** **9414138211** कुलपति, राजुवास, बीकानेर	राजुवास का नव संकल्प पांरपरिक पशुपालन में नवाचार	02.02.2017
2	**डॉ. रजनी जोशी** **9414253108** पशु जनस्वास्थ्य विभाग सीवीएएस, बीकानेर	भेड़ व बकरियों में होने वाले प्रमुख रोग व उनकी रोकथाम	09.02.2017
3	**डॉ. मदनमोहन माली** **9829127288** पीजीआई–वीईआर, जयपुर	नवजात पशुओं में होने वाले सामान्य रोगों का उपचार व बचाव	16.02.2017
4	**डॉ. सुदीप कुमार शर्मा** **9414775879** पीजीआई–वीईआर, जयपुर	एन्टीबायोटिक के उपयोग का पशु स्वास्थ्य पर प्रभाव	23.02.2017

मुस्कान !

संपादक
प्रो. आर. के. धूड़िया
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने है।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. आर. के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन विजय भवन पैलेस राजुवास बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. आर. के. धूड़िया